10. ब्रह्मचर्य और विद्यार्थी

ब्रह्मचर्याश्रम को विषयरूपी सुरंग से उड़ाने वाले आज लाखों करोड़ों स्त्री-पुरुष समाज में जिधर देखो उधर ही चारों ओर दिखाई दे रहे हैं। जड़ काटने से जैसे पेड़ की स्थिति होती है, वैसी ही खराब और गिरी दशा ब्रह्मचर्य रूपी जड़ को काटने वाले गृहस्थाश्रमियों की हो गई है। "नष्टे मूले नैव शाखा न पत्रम्" इस न्याय से विचारे दिन ब दिन सूखे जा रहे हैं और निःसन्तान बन रहे हैं! बाल पके हुए, अन्धे बने हुए, चश्मे लगे हुए, कमर टूटी हुई, बाहर भीतर रोगों से घुले हुए, आँख-गाल अन्दर धँसे हुए, दुखी, दुर्बल और निरुत्साही बने हुए, निःसत्व निस्तेज बनकर अत्यन्त डरपोक बने हुए, सब तरह से आत्म-पतित पापी और गुलाम बने हुए, असंख्य दुखों में सने हुए और जिन्दा ठठरी बने हुए, तिस पर भी श्वान, शूकर की तरह कामाग्नि में जलते हुए, ऐसे 20-25 वर्ष के निर्वीर्य बूढ़े विद्यार्थी और गृहस्थाश्रमी ही सर्वत्र दिखलाई दे रहे हैं। हा! यह दृश्य बड़ा ही भयानक मालूम पड़ रहा है। इस हृदयद्रावक दृश्य से भारत के

Scanned with CamScanner

प्रेमियों का हृदय आज भीतर ही भीतर जल रहा है जिनके ऊपर भारत का सच्चा उद्धार निर्भर है, जो कि भारत के मुख्य आशास्थल और आधारस्तम्भ हैं, ऐसे नवजवानों को ऐसी पतित और शोकपूर्ण दशा में देख कर किस भारतपुत्र का हृदय दुःख से हिल नहीं जाता। हमें तो रुलाई आने लगती है।

प्रभो! यह हमारा बड़ा भारी पतन हुआ है। जो भारत एक समय परमोच्च उन्नति का केन्द्र था, जिस भारत में हजारों बलशाली और वीर्यशाली नरसिंह वास करते थे, जिनकी ओर कोई भी राष्ट्र आँख उठाकर नहीं देख सकता था, जो सम्पूर्ण विद्याओं में सब का गुरू था, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण दुनिया पर पड़ा हुआ था, जिसके अंगुलिनिर्देशन से सम्पूर्ण दिग्मण्डल काँप उठता था, वही भारत आज गुलामों का कैदखाना-सा बन गया है और सब तरह से पीसा, निचोड़ा और जलाया जा रहा है। हाय! इससे बढ़कर पतन और क्या हो सकता है? नहीं, हमको तुरन्त अब उठ खड़ा होना चाहिए। इसी में हमारी भलाई है। यदि न चेतेंगे तो भारत का चिह्न तक मिट जाने की सम्भावना है। इसीलिए ऐ मेरे भारतवासी भ्रातृ-भगिनी मित्रगण! अब सावधान होइये। आँखें खोलकर अपने तथा अन्य देशों की ओर जरा निहारिये और निहार कर अपना पूर्व वैभव प्राप्त करने के लिए निश्चिंतता से कटिबद्ध हो ब्रह्मचर्य द्वारा अपना पुनः उद्धार कर लीजिए। एक ब्रह्मचर्य ही के द्वारा हमारा उद्धार होना सहज सम्भव है। अन्य उपाय वृथा हैं। विन्दु का साधने वाला सप्त सिन्धुओं को भी अपनी मुट्ठी में — कब्जे में — कर सकता है। सम्पूर्ण संसार में ऐसी कोई भी वस्तु व स्थिति नहीं है, जिसे ब्रह्मचारी पुरुष प्राप्त न कर सकता हो। हाथी का रहस्य जैसे अंकुश है वैसे ही हमारे सम्पूर्ण विद्या, वैभव और सामर्थ्य का रहस्य एकमात्र हमारा ब्रह्मचर्य

टेलीग्राम पर जुड़े @Brahmacharya

Scanned with CamScanner

ही है। आप अभी भी ब्रह्मचारी बन सकते हैं और वीर्यधारण करके अपना तथा भारत का सच्चा उद्धार कर सकते हैं। अतः ऐ मेरे परम प्रिय भारतपुत्रों! अब नींद को छोड़ दो। अब तक बहुत कुछ सो चुके हो और खो चुके हो।* अब जागृत होकर खड़े हो जाओ और खड़े होकर निश्चय के साथ अपने पैर सिंह के समान उन्नति की ओर निर्भयता से बढ़ाओ, अवश्य विजय होगी, निश्चय जानो।

Scanned with CamScanner